Mitra Sadhana Shikshan Prasarak Mandal's

Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri

Tq: Phulambri Dist : Aurangabad – 431111, (MS), India

One Day National Level Conference

On

"वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा, साहित्य तथा संस्कृति"

2nd February 2019

Organized by

Department of Hindi

Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri

Tq: Phulambri Dist : Aurangabad – 431111, (MS), India

Executive Editor

Principal, Dr. S. B. Jadhav

Chief Editor

Dr. D. N. Phuke

Co - Editor

Mr. B. T. Shelke

Published by : Aarhat Publication & Aarhat Journal's
Mobile No : 9922444833 / 8355852142
28nd February 2019
ISSN : 2277- 8721

© Mitra Sadhana Shikshan Prasarak Mandal's
Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri.

Executive Editor	:	**Principal, Dr. S. B. Jadhav**
Chief Editor	:	**Dr. D. N. Phuke**
Co editor	:	**Mr. B. T. Shelke**

EDITORS :

Disclaimer :

The views expressed herein are those of the authors. The editors, publishers and printers do not guarantee the correctness of facts, and do not accept any liability with respect to the matter published in the book. However editors and publishers can be informed about any error or omission for the sake of improvement. All rights reserved.
No part of the publication be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording and or otherwise without the prior written permission of the publisher and authors.

57	डॉ. बेवले ए. जे.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी	208 - 212
58	डॉ. मजीद शेख	उदात्त–प्रेम की औपन्यासिक अभिव्यक्ति : बाणभट्ट की आत्मकथा'	213 - 221
59	प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में कविता के बदलते तेवर	222 - 226
60	प्रा. डॉ. शंकर गंगाधर शिवशेट्टे	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा और साहित्य	227 - 230
61	प्रा. डॉ. संजय जाधव (पाथ्रीकर)	कवि केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रकृती वर्णन	231 - 234
62	कु. सुवर्णा जयराम काळे.	हिंदी उपन्यासों में कृषक जीवन	235 - 237
63	सागर गणेश चौधरी	वैश्विक बालसाहित्य : सामाजिक परिप्रेक्ष्य और मीडिया	238 - 242
64	कुंदन नाना जगताप	गोदान उपन्यास में चित्रित ग्रामीण जीवन	243 - 246
65	डॉ. नवनाथ गाड़ेकर	अनुवाद प्रक्रिया के विविध सोपान	247 - 250
66	प्रा. राजेश मेरसिंग खर्डे	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा	251 - 254
67	कु. रेश्मा सुनिल कांबळे	21 वी सदी की हिंदी गजलों में राजनीतिक विमर्श	255 - 263
68	प्रा. रामहरी काकडे	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष में हिंदी नाटक साहित्य	264 - 266
69	डॉ संतोष नामदेव तांदळे	पोस्ट बॉक्स नं .203, नाला सोपारा	267 - 269
70	डॉ. कुट्टे धनाजी सुभाष	वैश्वीकरण के परिपेक्ष में आदिवासी साहित्य का अस्तित्व	270 - 273
71	डॉ. शिवदत्ता वावळकर	भूमंडलीकरण के दबाव, किसान जीवन और हिंदी कविता	274 - 286
72	डॉ. भाग्यश्री कोष्टी	वैश्विक स्तर पर हिंदी का स्थान	287 - 289
73	प्रा. डॉ. संजय जाधव	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में दामोदर मोरे की हिंदी कविता	290 - 298
74	श्री. संतोष शिंदे	वैश्वीकरण के परिपेक्ष्य में ज्ञानरंजन की कहानियॉ	299 - 301
75	सय्यद टिपुसुलतान सय्यदनूर	वैश्वीकरण के दौर में संचार माध्यम और हिंदी की उपयोगिता	302 - 304

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष में हिंदी नाटक साहित्य

प्रा.रामहरी काकडे
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी।
तहसील -गेवराई जिला -बीड, महाराष्ट्र 431243

वर्तमान समय वैश्वीकरण का समय है।आज समूचा विश्व एक गाँव बन गया है जिसे 'विश्वग्राम' भी कहा जाता हो।"ईसका प्रधान अर्थ है विश्व में ऐसे बाजार का निर्माण करना जिसके अंतर्गत प्रत्येक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को अनिवार्य रूप से जुडना होगा।"1 यह एक ऐसी नीति है जो अमरीका आदि विकसित राष्ट्रों की लाभ के लिए बनाई गई है।इसके विरोधी इसे अमरीकीकरण भी कहते है।इसके माध्यम से आर्थिक दृष्टि से संपन्न राष्ट्रों की कंपनियां भारत जैसे विकसनशील विशाल आबादीवाले राष्ट्रों में अपना सामान बेचने के लिए आती है।इसके साथ ही अपनी भाषा,संस्कृति एवं सभ्यता भी लेकर आती है।जिसका प्रभाव जीवन के सभी क्षेत्रों पर दृष्टिगत होता है।धर्म,कला ,साहित्य एवं संस्कृति आदि घटकों पर यह प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है।साहित्य की अन्य विधाओं के समान नाट्यविधा में भी भूमण्डलीकरण का प्रभाव दिखाई देता हैं।

भूमण्डलीकरण के कारण व्यक्ति के जीवन का मूलाधार वित्त बन गया है।वित्त का महत्व इतना बढा दिया है कि वह नीति -अनीति, पाप -पुण्य, अच्छा -बुरा आदि की भी नहीं सोच रहा।अर्थप्राप्ति की अदम्य लालसा एवं अर्थोत्पादन में साधन शुचिता का त्याग इन नाटकों में दिखाई देता है।'आधे -अधूरे' की सावित्री आर्थिक विपन्नता से मूक्ति पाने के लिए ही अलग -अलग पुरुषों से संबंध बनाती है।असगर वजाहत का नाटक 'विरगति' का एक पात्र रुपयो के संदर्भ में अपने विचार प्रगट करते हुए कहता है,"धर्म, ज्ञान, बुद्धि, रुप क्या है जो दौलत से नहीं खरीदा जा सकता?प्रेम, घृणा, पाप,पुण्य क्या है जो दौलत नहीं खरीद सकती?" 2कुसूमकुमार का नाटक 'दिल्ली उँचा सुनती है' में माधोसिंह एक सेवा निवृत्त क्लर्क है।जो निवृत्ति पश्चात केवल पाँच महीने निवृत्ति वेतन पाता है।बाद में सरकारी कार्यालय में उसकी मृत्यु की नोंद होती है।कार्यालय के कई चक्कर काटने पर भी वह स्वयं को जीवित सिध्द नहीं कर पाता।वह अपनी पत्नी से इसकी असलियत बताता है,"ईस जमाने में सिर्फ साँस लेने का मतलब जिंदा रहना थोड़े है।पैसा चाहिए पैसा।पैसा आदमी को मारता है।पैसा जिलाता है।"3 अतिरिक्त धन कमाने कु लालसा के कारण रिश्वतखोरी बढ गई है।अजय शुक्ला का नाटक 'ताजमहल का टेंडर' में ताजमहल के स्वप्नदर्शी निर्माता बादशाह शाहजहां को वर्तमान समय के अधिकारी, इंजीनियर और ठेकेदारों के कारण त्रस्त होना पडता है।सर्वसत्तासंपन्न सम्राट का हुक्म और ख्वाब रिश्वतखोरी में फँस जाता है।क्योंकि यह एक अंतरराष्ट्रीय षडयंत्र है। भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप व्यक्ति व्यवस्था का गुलाम बनकर रह जाता है।उसकी नैतिक चेतना धीरे -धीरे मरने लगती है।'मिस्टर अभिमन्यु' में आई.ए.एस.अधिकारी राजन व्यवस्था में परिवर्तन लाना चाहता है किंतु जीवन की सूख -सुविधाओं को त्याग नहीं सकता।भूमण्डलीकरण के कारण व्यक्ति भौतिक सुविधाओं के पीछे भागकर सत्य का गला घोंट देता है।ईस संदर्भ में राजन की पत्नी विमल का यह कथन महत्वपूर्ण है,"हमें दुनिया भर से क्या मतलब।हमें चुपचाप आँखें मूंदे कर अपने रास्ते पर चले जाना है।कमिश्नर की बेसिक पे ढाई हजार से सुरु होती है।इन्हें कम से कम जॉइन्ट सेक्रेटरी तक पहुंचना है।"4

व्यक्ति को सामाजिक प्राणी कहा जाता है।व्यक्ति से समाज बनता है और सामाजिक स्वास्थ एवं विकास के लिए सामाजिक संबंधों का महत्व अनन्यसाधारण है।लेकिन भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप व्यक्ति -व्यक्ति, व्यक्ति -परिवार एवं समाज के संबंधों में बाधाएँ आ रही है।व्यक्ति की स्वार्थकेंद्रित उपभोगवादी जीवनदृष्टि ने

अनेक उपयोगी सामाजिक संस्थाओं और मान्यताओं को धाराशायी कर दिया है।'आधे -अधूरे' की सावित्री संपूर्ण पुरुष के खोज में अलग -अलग पुरुषों के नजदीक जाती है।एक समय अपने पति महेन्द्रनाथ से प्रेम करनेवाली सावित्री के लिए महेन्द्रनाथ अब एक लिजलिजा व्यक्ति है।इतना ही नहीं तो सावित्री अपनी सुविधाओं के लिए अपने पति एवं बच्चे को छोडकर अन्य पुरुष के साथ जीवन जीने का प्रयास करती है।अत्याधिक भौतिकता के कारण पारिवारिक संबंधों में काफी दरारें आई है।पति -पत्नी, पिता -पुत्र,भाई -बहन आदि रिश्तों में प्रेम की कमी आई है।खासकर नई पीढी अपना जीवन अपने वसूलों पर जीना चाहती है और यह वसूल भूमण्डलीकरण से प्रभावित वसूल ही है।'खंडित यात्राएँ' नाटक में पुरानी पीढी के जमींदार सुरेन बाबू और उनके पुत्र महेन का वैचारिक द्वंद्व उभरकर आता है।महेन अपना जीवन अपने मर्जी से जीना चाहता है।इसलिए नौकरी छोडकर पिता के विरोध के बावजूद पत्रकारिता करता है तथा बीना से प्रेमविवाह करता है।"मै सब कुछ अस्वीकार करना चाहता हूँ।मै किसी आदर्श, मूल्य, परंपरा को नहीं स्वीकारता।ये सब भुस भरे हुए शेर है, आई एम जस्ट सिक ऑफ एवरीथिंग।"5 नाटक 'युगे -युगे क्रांति' में भी पीढी दर पीढी सोच में हो रहे परिवर्तन का चित्रण है।नाटक में पाँच पीढियों की कथा के माध्यम से पीढी दर पीढी सोच में हो रहे परिवतन को चित्रित किया है। भूमण्डलीकरण का समय स्त्री -पुरुष समानता का समय है।विश्व के किसी भी कोने में अगर कोई घटना घटित होती है तो उसका असर समूचे विश्व में दिखाई देता है।'Me Too' का आंदोलन इसका उदाहरण है।भूमण्डलीकरण के कारण स्त्री को अपनी क्षमताओं को सिध्द करने का अवसर मिला है।जिसका लाभ उठाकर वह हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कार्य कर रही है।वहीं दूसरी ओर स्त्री के अधिकार को सिमित करनेवाली परंपरागत मान्यताओं को वह नकार रही है।'अलग -अलग रास्ते' की रानी अपने लोभी, स्वार्थी और चरित्रहीन पति को अपने जीवन से अलग कलती है।उसका भाई पूरन भी पाश्चात्य देशों का उदाहरण देकर उसे प्रोत्साहित करता है।'नए हाथ ' की शालिनी भी आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में एम.ए.की पढाई कर आई है।वह एक निर्भीक एवं स्वतंत्र विचारों वाली युवती है।वह विवाह को पति की गुलामी मानकर विवाहसंस्था को ही नकारती है।'देवयानी का कहना है' की देवयानी भी विवाह को परतंत्रता समझती है और मातृत्व को बोझ।उसका मानना है कि,नारी की स्वतंत्रता हरन करने के लिए ही उसे मातृत्व के तले दबा दिया जाता है।उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व का परिचय तब मिलता है जब वह वैवाहिक जीवन के तीन दिनों के बाद ही विवाह के उपलक्ष में दी जा रही पार्टी में ही विवाह -विच्छेद की घोषणा कर देती है।

भूमण्डलीकरण के कारण पुरानी नैतिक मान्यताओं पर प्रश्नचिन्ह लगाया जा रहा है।यह भौतिकवाद से भोगवाद तक ले जानेवाली विचारधारा है।ईसमें व्यक्ति अपरिमित भोग लेना चाहता है और भोग का कोई अंत नहीं होता।सेक्स संबंधी मान्यताओं में भी बदलाव दृष्टिगत होता है।'युगे युगे क्रांति' की पाँचवी पीढी विवाह संस्था में विश्वास नहीं रखती।अनिरुद्ध और अन्विता फ्रि सेक्स और मुक्त भोग में विश्वास रखते है।वह स्त्री के लिए पति आवश्यक न मानकर केवल पुरुष आवश्यक मानता है।'दरिंदे' नाटक की रति सेक्स के लिए विवाह की आवश्यकता को निरर्थक मानती है।उसके अनुसार जब स्त्री -पुरूष आसानी से अपनी सुविधा के अनुसार एक दुसरे को प्राप्त कर सकते है तो विवाह की आवश्यकता ही क्या है।'तिलचट्टा' नाटक की केशी अपने पुरुषत्वहीन पति से सेक्स सूख नहीं पा सकने के कारण एक डॉक्टर से संबंध बनाती है।जिसका उसे कोई भी अपराधबोध नहीं है।'कर्फ्यु' में पती और पत्नी दोनों भी अपनी वैवाहिक वर्जनाओं को तोडकर विवाहबाहय संबंध बनाते है।शहर में कर्फ्यू लगने से गौतम की पत्नी कविता संजय के घर में शरण लेकर उसके साथ स्वछंद प्रेम का आनंद लेती है, तो दूसरी ओर कविता का पति गौतम मनिषा नामक युवती के साथ संबंध प्रस्थापित करता है।दोनों को जब असलियत का ज्ञान होता है तब दोनों भी सत्य को स्वीकार करते है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष यह भारतीय संस्कृति के चार आधारस्तंभ रहे है।लेकिन भूमण्डलीकरण के

परिणामस्वरूप और भौतिकवादी सोच के कारण भारतीय संस्कृति के मूलभूत तत्वों में अमूलाग्र परिवर्तन आ रहा है।भूमण्डलीकरण के कारण धर्म की जडे हील रही है।धर्म एवं संस्कृति की प्रासंगिकता को प्रश्नांकित किया जा रहा है।ईश्वरीय सत्ता क्षीण होती जा रही है।धर्म की जगह स्वातंत्र्य, समता,बंधुता, स्त्री -पुरूष समता,सर्वधर्म समभाव आदि मूल्यों ने ली है।आज का युवक अमानवीय पारंपरिक मान्यताओं को नकारकर आधुनिक मूल्यों का स्वीकार करता दिखाई देता है।राजेश जैन के 'विषवंश'नाटक में रंदा और रुदल आधुनिक देशभक्त युवाओं का प्रतिनिधित्व करते है जो राष्ट्रहीत एवं समाजहीत के लिए अपने नीजी हीतो का त्याग कर सर्वस्व अर्पण करने की तैयारी करते है।महाराज अटपटसिंह की स्त्री वासना को ही उसकी कमजोरी बनाकर नायिका रंदा उसका अंत कर देती है।"रंदा):क्रुरतावश(अंतत :ढह ही गया वंश -वृक्ष।विष ने अपना प्रभाव तत्काल दिखा दिया।ईश्वर, क्षमा करना।अपने प्रतिशोध के लिए मुझे अपने कुचाग्रों में विष का लेप करके विषकन्या बनना पडा।"6 निष्कर्षत :कह सकते है कि,भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप वर्तमान समाज जीवन में जो बदलाव आए है वह सभी हिंदी नाटक साहित्य में दृष्टिगत होते है।व्यक्ति स्वतंत्रता की सीमाएं लाँघ रहा है।भौतिकवादी दृष्टिकोण एवं अत्यधिक स्वतंत्रता के कारण व्यक्ति नैतिक -अनैतिक, पाप -पुण्य आदि का विचार त्यागता जा रहा है।इसपर सोचने के लिए उसके पास न समय है न ईच्छाशक्ति।बढती स्पर्धा के कारण उसमें तणाव बढ रहा है।नैतिकता के अभाव के कारण कुण्ठाग्रस्त होकर व असफल जीवन व्यतित करने के लिए बाध्य है।अपने दोहरेपन के कारण वह जो है वह दिखाना नहीं चाहता और वह जो दिखाता है वह है नहीं।केवल अपना हीत सोचने की वृत्ति के कारण परिवार विघटित हो रहे है।रुपयो के पीछे भागनेवाला व्यक्ति अंत में अवसाद का शिकार हो रहा है।पति -पत्नी संबंधों की मधुरता कभी की खत्म हो चुकी है।मीडिया के अत्यधिक उपयोग के कारण व्यक्ति की नीजता का हनन हो रहा है।विवाहबाहय संबंधों मे बढोत्तरी हुई है। दूसरी ओर आधुनिक मूल्यों के स्वीकार से स्वातंत्र्य, समता,बंधुत्व, सर्वधर्म समभाव, देशभक्ति की भावना भी दिखाई देती है।स्त्री अपनी पारंपरिक बंधनों को तोडकर पुरुषों के कंधों से कंधा मिलाकर काम कर रहीं है।

1. भूमण्डलीकरण और समकालीन हिंदी कविता - डॉ.श्यामबाबू शर्मा पृ.17
2. वीरगति -असगर वजाहत नटरंग अंक 36 पृ.44
3. दिल्ली उँचा सुनती है -कुसुमकुमार पृ.191
4. मिस्टर अभिमन्यु -लक्ष्मीनारायण लाल पृ.67
5. खंडित यात्राएँ -श्री नरेश मेहता पृ.34
6. विषवंश -राजेश जैन पृ.60